आयुष्मान् शीवड़कर ओंकार को

सस्नेह —

कृ. अमा

३।३।६२

नवरत्न ग्रन्थमालाक ३०म पुष्प

उनटा-पाल

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नव-रत्न-गोष्ठी
मिश्रटोला
दरभङ्गा

प्रथम संस्करण १०००
१९७४ ई०

पुस्तक प्राप्ति स्थान
मिश्रटोला, दरभंगा।
एम्० एल्० एकेडमी,
लहेरियासराय।

मूल्य : एक टाका पचास पाइ मात्र

मुद्रक—पंचायत प्रेस, लहेरियासराय।

कहबाक अछि जे…

स्वाधीनता प्राप्तिसँ पहिने भारतीय जन-मानसमे सुखद-स्वरूपक एक कल्पना छलैक, मुदा स्वाधीनता भेटलाक बाद ताहि दिस देश मुड़ल जे दिशा वर्त्तमान दुर्गतिमे देशकेँ आनि कऽ ठाढ़ कऽ देने अछि।

आजुक असहनीय दुःस्थितिक संकेत युग-चक्रक आरम्भेमे ध्वनित भेल अछि—

'जगकेँ युग परतारि रहल अछि'।

एहि वर्ष जे लोकनि मतदानक अधिकारी भेलाह अछि तनिका लोकनिक जन्मसँ पूर्वे अर्थात् आइसँ बाइस वर्ष पूर्व एक लघु-पुस्तिकाक रूपमे प्रकाशनक प्रयोग भेल छल युग-चक्रक, किंतु अपन लघुकायाक अछैतो ओ नागर लोकनिक दृष्टिसँ इरोत नहि रहि सकल। सुधी-समाज ओ समीक्षक लोकनि एकर विशेष चर्चा कयलनि।

युगचक्रक माध्यमसँ नवीन भारतमे प्रवेश करैत राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ओ नैतिक विकृतिकेँ लक्ष्य बना जे व्यंग्य चित्र उरेहल गेल, भिन्न-भिन्न रूपमे आइधरि से क्रम चलिते रहल अछि। आरम्भमे सर्जनक गति तीव्र छल तेँ एक साँचमे ढरल बुझना जाइत अछि।

१९५०क बाद यदा कदा एहि प्रकारक जे रचना होइत गेल से भिन्न-भिन्न शीर्षकसँ प्रकाशित होइत रहल।

ओहि सभ रचनाक संग्रह प्रकाशित करबाक विचार स्थिर भेला पर एहन बहुतो रचना देखबामे आयल जाहिमे युगचक्रक प्रवृत्ति ओ अन्तर्धारा स्पष्ट परिलक्षित अछि। युगचक्रक ई पंक्ति -

बाजओ जग युगचक्रक चक्कर
अँटकत नहि, ई चलत निरन्तर ?

—वस्तुतः ओ चक्कर चलिते रहल अछि।

जन-सामान्यमे एखनहुँ युगचक्रक पुछारि होइत देखि प्रस्तुत संकलनमे युगचक्रमे प्रकाशित रचनां सभकेँ समाहित कय देल गेल अछि। हँऽ युगचक्रमे आचार्य श्रीगंगाधर मिश्र 'जीबू'क विशिष्ट भूमिका छल, जकर समावेश कागतक दुर्लभता एवं छपाइक महाघंता देखि नहि कयल जा सकल तदर्थ खेद अछि। दृष्टि ओ काँटाजन्य त्रुटिक हेतु क्षमा याचना मात्र शरण। इत्यलम्।

विद्यापति स्मृतिपर्व
१९७४

विनीत
श्रीअमर'

अनुक्रम



जयजय भैरवि ससुर भयाउनि

जयजय भैरवि! ससुर भयाउनि,
सासु-सताउनि देवी
पति छथि पशुपति तेँ तकइत छी
अवितहि शूटक जेबी।
वासर-रैनि चरणयुग शोभित
रहइछ कोमल चट्टी,
कतओक सोझ सिउँथिकेँ कयलहुँ
गेल घुसुकि कनपट्टी।
गौर वरन स्नो पाउडर लेपल,
'पर्स' सुशोभित हाथे,
भैंसुर, देओर, ससुर सब अबितहि
अपन झुकाबथि माथे।

कट कट विकट ओठ-पुट पाँड़रि
रहय लिपस्टिक पोतल,
'एयर टाइट कॉर्क' छी हे मिस !
आ मिस्टर छथि बोतल ।
'झन-झन-झनन वजै' अछि चूड़ी
हन-हन, पट-पट ठोरे,
चिर कुमारिके ! माथ न झाँपिअ
टेल्ह करिअ नहि कोरे ।
थरथर कपइत रहइछ डरसँ
नौकर ओ चपरासी,
ननदि, देयादिनि कय न सकै' छथि
लगमे आवि उकासी ।
गौण्ड बजा हसगौण्ड मङै' छथि
प्रत्यह भोरे माफी,

इन्दिराक युगमे जनमलि छी,
नित उठि पीबू काफी।
कटक डरें सब ठीक कटौलनि,
उखड़क डरसँ मोछो,
अछि प्रताप, नहि गाल बजयवामे
सकती क्यो धों छो।
विद्यापति कवि जीवित रहितथि
करितथि नहि अनुमानो
सहज कुमति वरदायिनि छी तें
मङितथि नहि वरदानो।
बतहू कवि कर जोड़ि कहैं छथि
भाभट अपन सम्हारू,
फ्रेण्डक संग सिनेमा जा कय
दूनू कुलकें तारू।



२

जगकेँ युग परतारि रहल अछि

जगकेँ युग परतारि रहल अछि।
एमहर ओमहर के तकैत अछि,
अपने हाथ सुतारि रहल अछि।

उठत नियन्त्रण भारतवर्षक
सुनलक बात जखन ई हर्षक,
बनिआ आ टुटपुजिया नेता
सब कोठी अजबाड़ि रहल अछि।

पकड़ि वेङ्कें आइ फतिंगा
सहजहिं लाभ कराबय गंगा,
बनबिलाड़ेकें रँगमंच पर
मुसरी धरि ललकारि रहल अछि।

बहुतो गप्प करय नित मारक,
बहुत विचारय काज सम्हारक,
बैसल विसुन-बिलाड़ि बहुत जन
सबतरि आगि पसारि रहल अछि।

बहुतोजन व्यापारी बनला'
बहुतो खद्धड़धारी बनला'
पत्रकार बनि बहुतो कवि
आ लेखककें टिटकारि रहल अछि।

सुरा औषधिक हेतु ग्राह्य अछि,
आजुक युगमे धर्म वाह्य अछि,
धयने मुहड़ा अनुपम मुखड़ा
निर्भय बोतल ढारि रहल अछि।

मालिक हाथी अपन गमौलक,
महथवार अधिकार जमौलक,
बगड़ा झपटल बाजक ऊपर
पदसँ पकड़ि उतारि रहल अछि।

रचना काल १९४८ ई०

३

पहुँचलनि गूड़ केहुनी लग धरि

पहुँचलनि गूड़ केहुनी लग धरि
उनटा कय हाथ चटै' छथि सब ।

लेखक गण 'क' 'ख' लिखि फानथि,
अपनाकें युग-गुरु कय मानथि,
तुक पर थुक दय, कविता कहि-कहि,
बुलि-बुलि कवि ज्ञान छँटै' छथि सब ।

नेतागण ताने भरथि सतत,
हुरदुङ् जनता ने करय सतत,
तें हेतु आइ युग-पुरुषलोकनि
व्यर्थे दिन-राति खटै' छथि सब।

धरती पर बहुतो छथि पिशाच
जनिका छनि लागल धधकि आँच,
पुरुषार्थ एकताकेर बलें
गौरवसँ सौह फटै' छथि सब।

ओ हितक बात मानथु किऐक,
ओ शास्त्र-तत्त्व जानथु किऐक,
तत्वक जे क्यो छथि जननिहार
रस्तासँ साइ हटै' छथि सब।

उपकारी गीरह ओझराबय
तं कोना विपक्षी-सोझराबय,
बिनु बुझनहिं अपनहि दाँतक तर
दय आङुर अपन कटै' छथि सब।

भरिबीत जगह अछि देल गेल
अछि लोक ताहिमे रेल-पेल
नहि अँटत सूइ, बनि फार मुदा
ततबेमे पैसि अंटै' छथि सब।

छैनि लागि रहल सबकेँ संचर,
रस्ते भेलाह बहुतो पंचर,
बिनु सुलेशनहि हड़बड़-हड़बड़
बिनु तकनहि छिद्र सटै' छथि सब।

रचना काल १९४८ ई०

अन्हार छथि भगवान, कहओ के

आन्हर छैथि भगवान, कहओ के।
आजुक युगमे भौतिकवादक
फूसि-फटक अभिमान, कहओ के।

पाथरमे ओ बास करै' छथि
आ हमरे उपहास करै' छथि
हमरे सँ पुजबौ' छैथि आ
हमरे पर 'शेखी-शान', कहओ के।

सुन्दरता लय पुरुष फटै' छथि
नारी वर्गक नाक कटै' छथि,
तेँ तँ महिला सब उठि चललीं
काटय पुरुषक कान, कहओ के।

ओ लड़ती आ भिड़ती जा कय,
सभा-मंच पर अड़ती जा कय,
पुरुष-समाजक बीच झाड़ती
बड़का टा व्याख्यान, कहओ के।

पुरुषक हेतु अनारी नारी
पुरुषे नारी हेतु अनारी
फूसि घोंघाउजिमे दूनू दल
'होइ' छथि व्यर्थ हरान, कहओ के।

प्रकृति-पुरुष दूनू समान अछि;
ने ई न्यून, न ओ महान अछि,
युग—चक्रक चक्कर पर नाचल
निश्चित अनुसन्धान कहओ के।

पेटक अछि लागल लपेट जा'
मुँहपर अछि लागल चपेट ता'
कक्कर माय ओ बाप ककर वा
होइत छैं' सन्तान, कहओ के।

सभक उखाही सब करैत अछि,
अपने टा लय जग मरैत अछि,
आनक लेखेँ आन बनल अछि
आलू सड़ल पुरान, कहओ के।

अपना लग संसार ढीठ अछि,
आँखिक लेखेँ पाछु पीठ अछि,
सभक जनै' छै' सब तैओ
अनके लय सब बैमान, कहुओ के।

एकर विवेचन के करैत अछि,
जे 'करैत' अछि से करैत अछि
हमरो सन बुड़िबान बुझै' अछि
अपनाकेँ विद्वान, कहुओ के।

सब अलच्छ अवतार लेलक अछि,
रुच्छ छुच्छ संसार देलक अछि,
अपन वेगर्त्ते युग अछि आन्हर
परतच्छक परमान कहुओ के।

रचना काल १९४८ ई०

५

कहबै' ककरा, के अछि मुँहगर

कहबौ ककरा, के अछि मुँहगर,
बहुतो दिन जग रहल बन्हायल,
वर्त्तमान से भेल सोन्हायल,
दोगदागमे सब तकैत अछि
अपना जोगरक अपने गरगर।

स्वर्ग-भूमि ई नरक भेल अछि,
नरम जते छल तड़क भेल अछि,
तड़क बनल अछि आजुक युगमे
गिलगर, ढिलगर, हलगर, सोगर।

नेढ़ा पर जा बैसल मच्छड़,
लगने लस्सा काटय कच्छड़,
'को' क कथा की, कात पड़ल छै'
आँखिक सोझाँ कमरी, कटहर।

मनमे सदिखन होइछ शंका.
राम-राज्यमे बनय न लंका,
कपि छथि बहुतो, किन्तु कपीशक
बिनु के डाहत नगर भयकर।

जँऽ जँऽ गीरह फोलि रहल छै',
ताँऽ ताँऽ मनुआँ डोलि रहल छै'
ढोँढ़क सुनि फुफकार निरन्तर
कापि रहल मतिहुक मति थरथर।

ककरा आब उठै' छै' चाटी,
सबहक बदलल छै' परिपाटी,
झाड़-फूक, वैदक पुड़िया नहि,
सुइया चाही नोंकगर, चोखगर।

शास्त्र-पुरान पुरान पड़ल अछि,
एकबारे पर प्रान गड़ल अछि,
व्यासक गद्दी लग जा' जयता
सुनता तावत लेक्चर चोटगर।

लटल-बुड़ल बनि गेल'छि हाथी,
बसुली फूकि रहल अछि भाथी,
कड़ची बसुलिक रूप धरै' अछि
महाविलच्छन सोरगर, पोरगर।

शाक्त लोकनि सन्हिआयल फिरला
वैष्णव सब मन्हुआयल फिरला,
पण्डित लोकनि तकै' छथि सहजहिं
सुरसुर-मुरमुर, नोनगर तेलगर।

जग चलैछ कबुला-पातीपर,
राखि हाथ अपने छातीपर,
बाजओ जग युग-चक्रक चक्कर
अँटकत नहि, ई चलत निरन्तर ?

रचनाकाल १९४८ ई०

६

हमर कथा के कान दैत अछि

हमर कथा के कान दैत अछि।
जे खोपड़ी छरबा न सकै' छल
से सब आइ मकान दैत अछि।

लुरिगर सब भरि मोन उठौलक,
किछु खयलक, किछु भार पठौलक,
जे मकैक नेढ़ा तकैत छल
से सब ऊँच मचान दैत अछि।

छलै' सुखायल जकरो भोँटी,
जे तकैत छल गूड़ा–रोटी,
सेहो सब अपना कूकुरकेँ
जलखैमे पकमान दैत अछि।

जे भगवानक नाम न लै' छल,
जे भगवा लय दाम न दै' छल,
से मुर्दा लय कफन – दान
मलमलसँ थानक थान दैत अछि।

पद-लोलुप सब लोक भेल अछि,
निस्सन जे छल, फोंक भेल अछि,
त्यागक मन्त्र सिखाबय अनका
आ अपने घुसकान दैत अछि।

धर्म-कर्मपर रोक भेल अछि,
नीक लोक सब जोंक भेल अछि,
भीतर सोनित चूसि रहल अछि
ऊपर-ऊपर प्रान दैत अछि।

छलै' न जकरा घऽर घड़ारी,
से कहबै' अछि आइ भँडारी,
जे परती तकने फिरैत छल
से अनका खरिहान दैत अछि।

ज्ञानक पोथा पढ़ि-पढ़ि बिसरल,
समय पाबि आगाँ दिस ससरल,
अनकर घेँट ततारय लय
से सब छूरीपर 'शान' दैत अछि।

सोझ लोह चुट्टा बनि गेल' छि,
और होयत, एखने की भेल' छि,
जीवी तँऽ कीकी ने देखी
युग-चक्र परमान दैत अछि।

अन्न बिना संसार विकल अछि,
अपने कर्मक सब प्रतिफल अछि,
गुरू गूड़, चेला बनि चिन्नी
सब गिदरा-गुड़कान दैत अछि।

चिष्ठी लय दंतखिष्ठी जकरा,
जोड़ा बड़द द्वारिपर तकरा,
घरक निकलुआ राजनीति—
सागरमे सब बुड़कान दैत अछि।

रचना काल १९४८ ई०

७

भरिजन्म कमयला बड़द, मुदा

भरि जन्म कमयला बड़द, मुदा
बैसल हकमै' छथि कुकुरे टा।

कत दुर्योधन भेल एकट्ठा,
भीमसेन सन बहुतो पट्ठा,
दुःशासन सब आसन छेकल
बड़बड़ पैघ अलगटेटा।
बैसल हकमै' छथि कुकुरे टा।

एको युधिष्ठिर भेटि न सकला
कर्म-रेख क्यो मेटि न सकला,
लेटि गेल छथि सब छाहरि तर
भरिपेटा ओ अधपेटा।
बैसल हकमै छथि कुकुरे टा।

पार्थ पुनः अवतार लेलनि अछि,
छार-भार कप्पार लेलनि अछि,
हिंसख कहाँ लगलनि अछि, ककरो
नहि लगलनि अछि हुरपेटा।
बौसल हकमौ' छथि कुकुरे टा।

लच्छन एक, कुलच्छन बेसी,
भुली बिलाड़ि थिकी अनदेशी,
भिनसर साँझ उठौना चाही
छलिहगर दूध, अवस्से टा।
बौसल हकमौ' छथि कुकुरे टा।

एक्कसर पार्थ कोना संचरता,
वन-वन जा फल-मूल कचरता.
लय प्रकाश दौड़ल अगौत अछि
भगजोगनी दल अगबेटा।
बौसल हकमौ' छथि कुकुरे टा।

हथ-हथभरि जे जीह बढ़ौ' छथि,
सबसँ बेसी सौह पबौ' छथि,
क्यो देयाद, क्यो भगिनमान,
क्यो साढ़ू आ क्यो सरबेटा।
बैसल हकमै' छथि कुकुरे टा।

युग धो धा कय लाजो चटलक
अपन पाप अनका सिर सटलक,
कटलक टीक, पलटलक संस्कृति
बाँकी छल बस एतबे टा।
बैसल हकमै' छथि कुकुरे टा।

रचना काल १८४९ ई०

उनटे तेरह चास करै' छथि

चक्रक गति निर्माणक युगमे
उनटे तेरह चास करै' छथि।

अपन प्रशंसा अपने मुँहसँ
द्वारि–द्वारि पर कयने घूरथि,
जकर जेहन छै' चालि तकर सङ
टुकदुम–टुकदुम तहिना पूरथि,
बैसल बगुलीकेर टकाकेँ
पाँचक आइ पचास करै' छथि।

जे जेम्हरे पौलनि, सन्हिअयला,
जे जेम्हरे चुकला, भुतिअयला,
छल सुतिआयल, से अछि कोंढ़गर,
भोंटगर सब सहजहि सुतिअयला,
बहुतोमे उल्लास भरल आ
बहुतो दीर्घ-निसास भरै' छथि।

बुझनिक सब धोकड़ी बनबौलनि,
किछु पुजने, सब ठाम पुजौलनि;
जे जेम्हरे पौलनि, से धयलनि,
किछु खयलनि, किछु काँख दबौलनि,
युग धयलक अछि तेहन चालि
ब्रह्माझा सेहो फाँस पड़ै छथि।

ढोलकी पर की-की ने बाजत,
बुढ़बा सब की-की ने साजत,
जतय भयंकर दाग पड़ल अछि
ततय-ततय अँकड़ी दय माँजत
छुछुआयल हम सब फिरैत छी,
ओ सब भोग—विलास करै' छथि।

आके घुथुर खाथु ने बैसल,
तनिको पेट दरिद्रा पैसल,
महादेव छथि वज्र—बूढ़, जग
जनिका अढरन—ढरन बुझै' छल
घोंटि-घाँटि तनिको लय राखू,
अच्छत—फूल निघास करै छथि।

राकस जकाँ करै' छथि भुक-भुक,
तें करैत अछि जीमे धुक-धुक,
अस्ताचल धरि पहुँचि कतेको
आब करै' छथि लुक-भुक, लुक-झुक
हँफने छथि सरिआ कय जे सब
से की घोड़ी-घास करैं' छथि।
उनटे तेरह चास करै छथि।

रचना काल १९४९ ई०

ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि

जरि गेल जौड़, जरि जाओ, मुदा
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि।

मानव नहि बनि सकले मानव,
कतबो कहब कदापि न मानब,
जनले जे अछि बात ताहि लय
कतबो कूदब, कतबो फानब,
औषधि—बाड़ी करू, मुदा
भीतर अँतरी धरि सड़ले अछि।
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि।

सबक्यो अगिला अपन बनाबय,
सबतरि आसन अपन जमाबय
पाथर सन जे अछि कठोर
तकरा रौदक धाही न घमाबय
जे गड़ि गेल पाँकमे पहिने
से एखनहुँ धरि गड़ले अछि।
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि।

रोपल गेल विषक जे लत्ती
से मुरछल नहि एक्को रत्ती,
बैसत ऊँट कोन गर धय से
जानथि आब स्वयं भगवती,
जे गौरवसँ अकड़ि चलै' छल
सहजहिं आब अकड़ले अछि
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि।

पजरल छल कनिङ्गोटा चिनगी,
जे लेलक संसारक जिनगी,
भीतर-भीतर धुँआ रहल अछि,
निश्चय पहुँचत जा कय फुनगी,
आब मिझायल छी बुझैत, तँऽ
भ्रम थिक, आब पजरले अछि।
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि।

सब छथि अपने गाल फुलौने,
होयत आब की घाड़ भुलौने,
जनिके छलहुँ मिलौने सब मिलि
सौह लोकनि छथि आइ हुलौने,
बुन्दें—बुन्दें भरल घैल जे पापक
आब अफड़ले अछि।
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि।

बहुतो गूड़-चाउर चिबबै' छथि,
पाकल बाँस कते' लिबबै' छथि
छथि सँसारक कते' अभागल
जे एखनहुँ धरि मूँह बबै छथि,
किछु जन झिल्ली झाड़ि रहल छथि
किछु बुझैत छथि—'झड़ले अछि'
ऐंठन एखनहुँ धरि पड़ले अछि।

रचनाकाल १९४९ 

१०

बगुला बौसक मे बिनु गेलें

बगुला बौसकमे बिनु गेलें
जीवनकें सफल कोना कहतौ'
ककरो क्यो सफल कोना कहतौ'।

इच्छा हो यदि जीबैत रही,
कैञ्चोभरि मधु पीबैत रही,
फटलो-पुरान खद्धड़क प्योन—
पर प्योन ताकि सीबैत रही,
टोपक बहु टोपी बिनु लेलें
गर्दनिकें फँसल कोना कहतौ'
ककरो क्यो सफल कोना कहतौं'।

घूमू किछु दिन अपनहुँ जा कय
सत्ताधारीक महल्लामे,
देखब ढाबुस कोंकिआय रहल
ढोंढ़क अति लघु मृदु-कल्लामे,
उचङब अलगट्टे बिनु सिखने
छोआ-मधुधार कोना बहतै'
ककरो क्यो सफल कोना कहतैं' ।

मुखड़ा हो फूटल ढोल, मुदा
बाजू मिसरी सन बोल अहाँ,
पिछड़ैत रहय यदि पैर पाछु
मानू दुनिआकें गोल अहाँ,
घड़सूड़क मौल बिना छुटने
क्यो 'ऐश'क भार कोना सहतै'।
ककरो क्यो सफल कोना कहतै' ।

चारू कछेड़ समगदें छै'
इँचना-पोठी से छै' अमार,
ककरा बखरामे की पड़तै'
नहि सभक एकरङ छै' कपार,
कबुला-पाती किछु बिनु कयने
गैँचीक सुतार कोना लहतै'।
ककरो क्यो सफल कोना कहतै'।

साधना-निरत, इष्टक ऊपर
युग-युगसँ ध्यान लगौने जे,
ई धवल-वसन-बगुलाक पंक्ति
आशा लय अलख जगौने जे,
डिहवारक खूर बिना पुजने
पीड़ाक पहाड़ कोना ढहतै'।
ककरो क्यो सफल कोना कहतै'।

ककरो उपवन छै' मजरि रहल
अनके रक्तेँ सब दिन सींचल,
ककरो अन्तर छै' पजरि रहल
भूखल शिशु दिस मन छै' खीचल,
बाजह नव-युगक विधातागण !
जग जाकय ककर चरण गहतै' ।
ककरो क्यो सफल कोना कहतौ ।

रचनाकाल १९५० ई० 

ई अजगुत कोन पुरनके सबटा रंग छै'

ई अजगुत कोन पुरनके सबटा रंग छै' ।
कने-मने किछु भेद छैक जे,
दुहुक फराकेँ वेद छैक जे,
दुहुक माँझमे एक जाल
आ ताहूमे जे छेद छैक से
अद्भुत कोन, असलके सबटा ढंग छै' ।

कमसँ कम सब देशी अछि तँऽ ?
उजरा वस्त्र स्वदेशी अछि तँऽ ?
गनले-गूथल भोग करओ
तैओ पहिनेसँ बेसी अछि तँऽ ?
मानि लिअऽ जे बाँचल एक अलंग छै' ।

४५ : श्रीअ

गप्पक बोर खाइ' छै' माङुर,
गड़ल छैक बुधियारक चाङुर,
बनल योजना-पूल पाँचटा
योजनसँ बेसी दू आङुर,
ताहीपर तँ भीतर जोर उमंग छै'।

जनता की, जनता थिक गोबर,
नेता लोकनि सजाबथु कोबर,
दुर्लभ सकल वस्तु सुलभे अछि
रहय टेंटमे केवल दोबड़,
सरकारी गाड़ी भय गेल उटंग छै'।

अधिकारी छी सब मतदानक,
बेटा सब बयो छी भगवानक,
पुनि सरकारी राशन चाही
ई हिस्सख थिक महा-भयानक,
मतलब की जे ककरो हेतु पलंग छै'।

सर्वोदयकेर फाँकू अंकुरो,
वस्त्र-दान लय काटू टकुरी,
नव-उन्नति बिजली-घर देखू
बान्हू पाथे' पहुँचू सकुरो,
यन्त्र देखि जन-तन्त्रक के नहि संग छै' ।

नव निर्माणक हूलिमालिमे,
घोड़ा-फर्जीकेर चालिमे,
भेद न किछुओ मानक चाहो
हलुआ-पूरी भात-दालिमे
रंग आइ संसार भरिक बदरंग छै' ।

रचना काल १६५६ ई०

१२

देखहक हौ गांधी बाबा

देखहक हौ गान्धी बाबा तोरो स्वराजमे
लाखो करै' छह काँहि-काँहि हौ !

पेटमे न अन्न छै' न देहपर कपड़ा,
घरमे न खर्ची ने चारपर खपरा।
जेठक चण्डाल दुपहरिया नचै' छै'
कागा डकै' छै' टाँहि-टाँहि हौ !

ढन-ढन पड़ल छै' घरमे कोठी,
लोक बनल अछि फांड़ल पोठी,
भात खयनिहारके" ने अल्हुआ जुड़ै' छै'
सब क्यो करै' अछि फाँहि-फाँहि हौ !

दिनकर तपौने जाइ छथि धरती,
धरती से बांझ पड़ल बनि परती,
करती बहुआसिन की चुलहा जरा कय
नेना करै' छनि खाँहि-खाँहि हो !

चेला ओ चाटी से बनलऽ अपावन,
अयलै' महा पनिआहा सतावन,
लाबनपर डिबिया से छुच्छे पड़ल छै'
टेमी जरै' छै' छाँहि-छाँहि हो !

जीरसन उपजलै' गहुमक दाना,
आबि गेलै अगिलगुआ जमाना,
छोटका-मझोलकाक बात की कहिअऽ
बड़को खसै' छै' धाँहि-धाँहि हो !

रचना काल १९५७ ई०

आब लोक बुझलक पी० एल् चारि सय अस्सी

जॉनसन वखारीमे विल्सन छथि ठेकी
भुट्टो छेथि उकखरि, सुकर्ण थिका ढेकी,
चाउ-माउ जंघा, जर्दान बनल पुछड़ा
भारत वनि पैसल अछि सामवला मुसरा,

चौटन कचकूह धान भऽ गेल भरकुस्सा
राष्ट्र-संघ चालनि थिक चालि रहल भुस्सा ।

ऊथाँ छथि सूप, नहि फटका रहलनि दाना,
फटकनिहार मार्शल अयूब छथि जनाना,
पुर्त्तगाल तुर्की बहार भेल अछि मेर्खी,
ई सुरक्षा-परिषद से औँटि रहल चर्खी,

आब लोक बुझलक पी०एल०चारिसय अस्सी,
भोलाकेँ आक धुथुर, भैरवकेँ खस्सी।

पूब पाकिस्तानमे अवतरली' अछि दुर्गा,
पच्छिम पख्तून सब पकड़लनि अछि मुर्गा,
बीचोमे आहि रे वा! भय गेलनि कुगऽर,
चिनमार पर चढ़ि गेलनि गोरक्षा सुगऽर,
'सेबर' ओ 'सर्मन' प्रमाणित भेल कोहा,
एहने मुँह लेने मिञा लेताह्नि लोहा!

रचना काल १९६५ ई०

१४

शिव ई बाना छोड़ू औ !

शिव ई बाना छोड़ू औ !
बेचू बूढ़ बड़द, लय ट्रैक्टर, परती तोड़ू औ !

भारतमे गण-तन्त्र भेल अछि, बेटा अहिंक गणेश,
कार्त्तिकेय सेनापति छथिहे, अपने फोलू प्रेस,
देशसँ नाता जोड़ू औ !

सक्रिय रहिकय राजनीतिमे, जन-सम्पर्क बढ़ाउ,
अपने भाषण खूब करू, जनताकेँ काज अढ़ाउ,
पुरनका धारा मोड़ू औ !

भूत-प्रेत बैताले 'वोटर', देत अहींकेँ वोट,
अस्सी नम्बर खद्धड़ पहिरू, फेकू फाड़ि लङोट,
भाङ चिन्नी सङ घोरू औ !

बसि कैलास कंपै' छी जाड़ेँ, तकर प्रयोजन कोन,
'एयर कंडीशंड' भवनमे, रहू लगाकय फोन,
ज्ञान-गुदरीकेँ गोड़ औ !

सुलभ मरकरी, व्यर्थ चन्द्रमा, छेकता तखनललाट,
'अमर' लोकपर धरिकक्ष शासन, बनथुभैरवेलाट,
असुरकेर भण्डा फोड़ औ !

रचना काल १९६६ ई० 

सि०मिहिर, १९.१२.१९६५

अल्पमतक बहुमतक सोहारी

अल्पमतक बहुमतक सोहारी
बेलि रहल छथि सत्ताधारी,
नऽव नोथारी, भरि भरि थारी
पाबथि राजनीति - व्यापारी।

हाकिमकें बङला चौचारी,
मङनी जीप अनेर सवारी,
किन्तु कर्मचारीक लचारी
जनता गाबओ बैसि नचारी।

आबि विदेशी दै' अछि हुलकी,
पाटी सब भय गेल'छि मुलकी,
अमरीकी गहुमक खा फुलकी
जनता चलय चालि पुनि दुलकी

ई किसान अलबौकक टाड़ा,
पंपिङ सेटक करथि दुआरी।

रंग-विरंगक एमेले अछि,
गाम गाममे हूलेले अछि,
पगहा - पड़रू सहित पानिमे
ई महींस निश्चय गेले अछि,
दल-बदलू सब सोचि रहल छथि
अदलि-वदलि दल हाथ सुतारी।

पाँच सात दल जँ मिलि गेला,
भेल गुरू सब, रहल न चेला,
लागल अछि अफसर केर मेला,
गुड़कय नहि सरकारी ठेला
केन्द्रमे बैसल छनि नारी
की कय सकता अटलबिहारी।

रचना काल १९६७ ई०

इण्डिकेट-सिण्डिकेट

इण्डिकेट-सिण्डकेट

वाम दिस खुरपी दहिन दिस बेंट।

साप ओ छुछुन्नरिकें भय गेल भेंट,
अपनहिसँ दूनू ममोड़ि लेलनि घेंट।

अह्‌मद ओ रामकेर भेल एक पेट,
सम्प्रदायवादक बँचल नहि छेंट।

पौलनि चौहान जखन चौबिसक रेट,
बँचला देसाइ भाइ चौदह करेट।

मन्त्रि-परिषद् वनमे भेलनि आखेट,
रामो सुभगपर चललनि चपेट।

वाम ओ दहिन छल पहिनहिसँ फेँट,
हाथी पर्यन्त भेला 'आउट ऑफ डेट'।

डाङकेँ टाङमे लेलनि लपेट,
संसपाक संग द्रमुक रहला समेट।

सुब्रह्मण्यम्‌केर फराक भेलनि 'सेट',
गप्पाजी गनि रहला गप्पीकेर गेँट।

सत्ता परसि देल प्लेट पर प्लेट,
तखनहुँ लगैत करय के अवण्ड लेट'।

केन्द्रमध्य भेल खेल बेस ई क्रिकेट,
गेन फानि पार गेल इण्डियाक 'गेट'।

फानल 'फिरै'ए तमाम अलगटेंट,
'बतहू' बलेल सेहो बाँटथि 'बुकलेट'।

रचनाकाल १९६९ ई०

१७

प्रजावर्गकें पड़ल प्रयोलन

प्रजावर्गकें पड़ल प्रयोजन ।

अपनामे अपनैती चाही,
भदै' अगहनी चैती चाही।
दूध-दूध आ पानि-पानि लय
गामेमे पंचैती चाही ।

खेतक खेत पटौनी चाही,
नहरिक नङड़िसटौनी चाही,
फुर्र-फाँइमे उड़वय वाली
घरनी नहि बिलटौनी चाही ।

सुन्दर, स्वच्छ घड़ारी चाही
आ निष्पक्ष भँडारी चाही,
काज कतेको पैघ रहओ
नहि लाम-काफ सरकारी चाही ।

मनी झड़य से बोया चाही,
दुन्ना नहि, दूतीया चाही,
थोड़ो सन हो, नीक-निकुत हो,
किन्नहुँ ने ए छीया ! चाही ।

बेटी नहि अगतीया चाही,
बेटा नहि पछुतीया चाही,
एकेटा हो, मुदा अन्हारक
घरमे जरइत दीया चाही ।

हृदय-पवित्र पड़ोसी चाही,
संयत कमला-कोसी चाही,
देहक नापेँ वस्त्रक संगहि
पेटक नापेँ चाही भोजन
प्रजावर्गकेँ यैह प्रयोजन ।

रचनाकाल १९७०



अफसर सबकेँ पड़ल प्रयोजन

अफसर सबकेँ पड़ल प्रयोजन ।

पौघ-पौघ करखाना चाही,
नेता सब चरखाना चाही,
बाथरूम पैखाना संगहि
क्लब चाही, मयखाना चाही ।

घर सरकारी क्वाटर चाही,
टोटी लागल 'वाटर' चाही,
'फौरेन-डिग्री' प्राप्त कराबय-
लय बेटामे काटर चाही ।

Scanned by CamScanner

धिया-पुता लय 'टीचर' चाही,
बङला लय फर्नीचर चाही,
प्रोमोशन पयबा लय कोनो
अखबारोमे फीचर' चाही।

पत्नीओ लय 'ट्यूटर' चाही,
गणित हेतु 'कम्प्यूटर' चाही,
सपत्नीक भरि नगर घुमय लय
नहि मोटर तँ स्कूटर चाही।

बैसलमे किछु भत्ता चाही,
पोथी छी, तें गत्ता चाही,
छक्का-पंजा पत्ता चाही
जे कोनहुना सत्ता चाही।

धर्मक नाम निपत्ता चाही,
कोँढ़ कटै' लय कत्ता चाही,
थोड़े' समर्थक मत्ता चाही,
'सोर्स' एक अलबत्ता चाही।

नित्य बाइली आना चाही,
रोज सिनेमा जाना चाही,
भोज भातमे कचरम-कूटक
हेतु कतहु चाही आयोजन
अफसर सबकें यैह प्रयोजन।

रचना काल १९८० ई०

१९

लुच्चा सबकेँ पड़ल प्रयोजन

लुच्चा सबकेँ पड़ल प्रयोजन।

मौगी सब मर्दाना चाही,
गाम गाममे थाना चाही,
नूर्ण ब्रिलैंती बाना चाही,
रुचिगर फिल्मी गाना चाही।

सदा काँबतर कैंची चाही,
लेन-देन हथपैंची चाही,
टापि छापि हो, गाँज अड़ा हो
नहि माङुर तँऽ गैंची चाही।

हाथ न कखनहुँ खाली चाही,
भोरे चाहक प्याली चाही,
जठरानल धधकैत रहओ
मुँहमे धरि पानक लाली चाही।

अरसल-परसल थारी चाही,
काज न कोनो भारी चाही,
सीट-साट आ फीट-फाट लय
सबटा माल उधारी चाही।

जान बँचय लय बेढ़ो चाही,
पैघक संग लसेढ़ो चाही,
बरु परोक्षमे गारि पढ़ओ
सोझांमे मानओ बातक ओजन
लुच्चा सबकेँ यैह प्रयोजन।

रचना काल १९७० ई०

२०

आइ छात्रकें पड़ल प्रयोजन

आइ छात्रकें पड़ल प्रयोज़न

माय बापपर औडर चाही,
स्नो चाही आ पौडर चाही,
क्लीपे लागल ककबा चाही,
चकबी संगहि चकबा चाही।

झाड़-फुनूस वृहत्तर चाही,
रेडीमेडे उत्तर चाही,
गेस-पेपरक मेला चाही,
बुद्धिक ऊपर ठेला चाही।

पढ़ब-लिखवसँ छुट्टी चाही,
माछ-मांस दू बुट्टी चाही,
प्रति प्रश्नक इन्जेक्शन चाही,
कोशिश हेतु कनेक्शन चाही।

किछु विद्रोही झण्डा चाही,
जलखै--मुर्गी अण्डा चाही,
सगर नगर हुरदुंग मचाबय—
लय कोनो हथकण्डा चाही।

ड्रेन पाइप ठढ़मुत्ता चाही,
किन्तु न तनमे बुत्ता चाही,
बँसबिट्टीक छुछुन्नरि-मुहसन
नोक बला ओ जुत्ता चाही।

आँखिक आन्हर वीक्षक चाही,
परम उदार परीक्षक चाही,
प्रथम-श्रेणी प्राप्त करयलय
तीर्थ-भ्रमण लय हो संयोजन
आइ छात्रकेँ यैह प्रयोजन।

रचनाकाल १९७० ई०

२१

देखू दिल्लीक रंग

देखू दिल्लीक रंग,
आखिरमे आबि भेल लोक-सभा भङ्ग।

सत्तरि सुधंग सोझ कयलक प्रसंग,
अबितहि एकहत्तरि उघाड़ि देलक अंग।

प्रतिपक्षी चुटकीमे भेला चितंग,
रमकैत पछबामे बहि गेल उतरंग।

करितो समर्थन, करैत छलनि टांग,
घोषणा सुनैत मात्र भेल सेहो दंग।

बिड़रोमे गप्प उड़य रंग ओ विरंग,
वाम दहिन दूनूकेर झड़तनि अलंग।

के जनैछ ककरा के करता उलंग,
लबनी के छौता, के खयता लवंग।

रहि-रहिकय सबकें उठै' छनि तरंग,
भोग हेतनि नरक आ कि चढ़ता सरंग।

झाँउ-झाँउ सूनि चित्त रहै' छलनि चंग,
बेस भेलनि लड़बाकेर चढ़लनि उमंग।

गेँठ-जोड़ होइत छलै' नारि पुरुष संग,
धन्य ई चुनाव तकर बदलि देलक ढङ्ग।

जनता तँ जनते थिक नंग ओ धड़ंग,
लूरि-मुँहक कोन कथा चालिओ अवढंग॥

धरता क्यो माँटि, क्यो दफानता पलंग,
सोचि-सोचि मगन रहथि 'बतहू' मतंग।

रचनाकाल १९७१ ई०

२२

देखू दिल्लीक ताव

देखू दिल्लीक ताव,
अलग-बलग सुतरि गेलनि इन्दिराक दाव।

नहि, नहि, नहि, कहितहिमे पहिनहि कराय देल
घोषणा जे मध्यावधि होयत चुनाव,
घयलनि करुआरि पार-घाटे उतारि देल
उब-डुब करैत कङरेसियाकेर नाव।

कयलनि च्चितंग कते मत्ता-मतंगजकें
असलोसँ बेसी सुतारि लेलनि फाव,
ठाम-ठाम कतेक ढेङ ठामहि पर उनटि गेल
पऽ तँ पड़ल एतय, ओतय चिरा गेल घाव।

देश अपन बेस॰ भेष धयने विदेशकेर
भारतीयताक - संग दूर कय लगाव,
आओत समाजवाद बादमे, समाज मुदा
नोन-तेल - लकड़ीकेर बूझि लेत भाव।

जनता बेचारो की जनती जे वामपन्थकेर
छैक कोन देश दिस कय झुकाव,
भारतकेँ इण्डियाक रूप दय बनाउ भव्य
मानि लेल गेल मित्रदेशकेर सुझाव।

हीन हो चरित्र, चित्र दीनताक निखरि उठय,
जीह नमरि चाहि रहल खाइ हम पोलाव,
बतहू' मतंग भूतनाथे सहाय होथि
देशकेर लाजक हो तैखन बचाव।

रचना काल १९७१ ई०

२३

बाबाक भरोसें जे कयलनि फौदारी

बाबाक भरोसें जे कयलनि फौदारी,
जूड़नि ने माँड़ मिजा ताकि रहला ताड़ी।

चिचिआइते रहला जे अल्ला हो अल्ला,
से चटकन लगलनि जे फूलि गेलनि कल्ला।

जकड़ल छथि युद्धक उन्माद सनक रोगसँ,
छुटियो ने सकितनि बिनु ज्ञानझाक योगसँ।

नाम की तँ निकसन आ करनी अधलाहे,
बाँचि गेल नाव, मुदा डूबल मलाहे।

जाहि समय बंगलामे मचलौ' तबाही,
तहिया की अक्किलपर पड़ल छलनि लाही।

बतहा । एहि कूकुरकेँ दैत रहला टुकरी,
मारि खा पड़यलनि तँ मूँह भेलनि चुकरी ।

चेला पिटयलनि तँ लय सातम बेड़ा,
बंगालक खाड़ीमे खसा देलनि डेरा ।

दूरेसँ बूझि गेलनि ई सबटा रूसो,
हनछिन जँ करितथि तँ लागि जैतनि घूसो ।

नाङड़ि पटकि कय रहि गेलथिन ई काका,
ढेका तँ छनिहेँ ने, चल गेलनि ढाका ।

नाक भरल नकटी आ आँखि भरल काँची,
चल गेलनि ढाका आ जैतनि कराँची ।

यैह यैह छथि याहिया आ वैह-वैह छथि भुट्टो
पुनि खटपट करता उपाड़ि लेबनि खुट्टो ।

रचना काल १९७१ ई०

२४

टा पाल

हमहूँ छी एही समाजमे,
जकरा खातिर गान्धी बाबा
तिल-तिल जीवन अर्पण कयलनि,
जकरा खातिर सहस-सहस
बलिदानी रक्तेँ तर्पण कयलनि,
जकरा खातिर कते माय-बहिनिक
सिउँथिक सिन्दूर मेटायल,
जकरा खातिर कते मनीषी
लाठी खा-खा भूमि लेटायल,
जकरा खातिर श्वास-श्वाससँ
एक प्रबल फूत्कार उठल छल,
जकरा खातिर प्राण-प्राणसँ
प्रलयङ्कर हूंकार उठल छल,
ताहि दिनुक देखल सपना की
एखनहुँ धरि साकार भेल अछि,
युग-युगसँ कुण्ठित समाजकेर
एखनहुँ धरि उद्धार भेल अछि ?

अपनहुँ छी एही समाजमे
जन्म-सिद्ध अधिकार सभक
थिक ई स्वतन्त्रता,
देश - समाजक अहंकार
नहि थिक स्वतन्त्रता,
करबा लय उपभोग तकर
हम लौ' छी पक्कड़,
एतबे टा बुझबामे
सब छी लाल बुझक्कड़,
औंड़ि मारि रहलहुँ सुख-सुविधा
पयबा लय हम,
किन्तु न छी तैयार
तत्त्व दिस जयबा लय हम

ई समाज स्वाधीनताक
की मोल बुझै'ए,
स्वार्थ - सिद्धि लग हमरो
ने भरि टोल सुझै'ए,
नहि आवश्यक वस्तु
तुबै' छै, आसमानसँ,
नहि उपभोग्य पदार्थ
चुबै' छै' संविधानसँ,
एहि हेतु देशक श्रम-धन
अनिवार्य होइत छै'
एहि हेतु प्रत्येक डेग
सुविचार्य होइत छै'
हू हू कयलासँ नहि बढ़इत
छै' कोनो देशक उत्पादन
गाल बजौने रचना-मूलक
काजक नहि होइ छै' सम्पादन

आहो छेथि एही समाजमे,
भोगवाद कोनो समाजकें चिबाजाइ छै'
अपन कुकर्मे अपने गर्दनि दबा जाइ' छै'
भोगवाद सौंसे समाजमे
वस्त्र फोलिकऽ नाचि रहल अछि,
भोगवाद अन्तरक आगिकेँ
और फूकिकय आँचि रहल अछि,
की भविष्य भारतक भालपर
अंकित अक्षर बाँचि रहल अछि,
आइ विवेक हमर पौरुषकेँ
चढ़ा चाँछपर जाँचि रहल अछि
ओहो छेथि एही समाजमे,
अपनहुँ छी एही समाजमे।
सब क्यो छी एही समाजमे

आइ आत्म-विश्वास कदाचितटूटिजाय तँ,
आकाशक लोभेँ ई धरती छूटि जाय तँ,
थिक बुझबाक अदिन्ता
नचइत अछि कपार पर,
पाथर अछि पड़ि गेल
सेहन्ताकेर पथार पर.
काक डकै' अछि, पहिने
पढ़ू एकर ई भाषा,
आइ करक अछि निर्धारित
नीतिक परिभाषा,
ई समाज दिग्भ्रान्त
परम उत्फाल बनल अछि,
देशक नौकामे ई
उनटे पाल तनल अछि।

रचना काल १९७४ ई०